Q6. गुटनिरपेक्ष नीति क्या है ? इसके उद्देश्यों, उपलब्धियों, आलोचनाओं एवं प्रासंगिकता का वर्णन करें। - Dr. Akhlakh Ahmad.

Ans. गुटनिरपेक्ष की नीति का अर्थ है- गुटों की राजनीति से दूर रहना। दोनों गुटों के साथ मैत्री रखना, किसी के साथ भी सैनिक संधियाँ न करना और एक स्वतंत्र नीति का विकास करना। गुटनिरपेक्ष नीति का अर्थ यह भी होता है कि संसार की घटनाओं को योग्यता की कसौटी पर जाँचना और जो न्यायोचित लगे उसके अनुसार व्यवहार करना।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विश्व गुटबाजी का शिकार हो गया। विश्व/संसार अमेरिकी (पूँजीवादी) और सोवियत रूस (साम्यवादी) दो गुटों में विभक्त हो गए। ~~उधर अधिकांश स्वाधीन राष्ट्र राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर~~ दोनों महाशक्तियाँ एक-दूसरे के विरोधी थे जिसके कारण दोनों में तनाव बढ़ता गया, जो शीतयुद्ध में परिवर्तित हो गया। उधर अधिकांश स्वाधीन राष्ट्र राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े, आर्थिक-दृष्टि से परमुखापेक्षी, और सैनिक-सामरिक दृष्टि से कमजोर थे। अमेरिका और सोवियत संघ स्वतंत्र देशों को अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने के प्रयास में जुट गए थे। नवस्वाधीन देशों को किसी गुट में सम्मिलित होने का अर्थ अपनी स्वाधीनता खोना था। भारत में एक लम्बे संघर्ष के बाद स्वतंत्र हुआ था, अतः अपनी स्वतंत्रता किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता था। विश्व की गुटबाजी से भारत का भी चिंतित होना स्वभाविक था। इसका यही वैचारिक पृष्ठभूमि थी। अतः भारत ने गुटनिरपेक्षता की आवाज सर्वप्रथम बुलंद किया। 7 Dec. 1946 को ही जवाहरलाल नेहरू ने रेडियो प्रसारण में स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत देशों को विश्व के परस्पर विरोधी गुटों से अलग रहने की सलाह दी। प्रारम्भ में तो इसकी खिल्ली उड़ाई गयी, लेकिन जवाहरलाल नेहरू ने इसे मूर्त रूप देने के लिए विश्व के तीन महान नेता (भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, युगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो और मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल-नासिर) अतः [illegible] और 1961 में बेलग्रेड भारत के पहल पर ही तीनों कर्णधारों ने गुटनिरपेक्षता की नीति की शुरुआत की। इसमें पाँच

आधार स्वीकार किए गये – (i) सदस्य देश स्वतंत्र नीति पर चलता हो (ii) सदस्य देश उपनिवेशवाद नीति का विरोध करता हो (iii) सदस्य देश किसी सैनिक गुट का सदस्य न हो (iv) सदस्य देश ने किसी बड़े ताकत के साथ द्विपक्षीय समझौता न किया हो (v) सदस्य देश ने किसी बड़े ताकत को अपने क्षेत्र में सैनिक अड्डा बनाने की इजाजत न दी हो

गुटनिरपेक्षता का अर्थ शक्तिमूलक राजनीति से पृथक रहना और सभी राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्ण एवं सहअस्तित्व और सक्रिय अंतर्राष्ट्रीय सहयोग है चाहे वह राष्ट्र गुटबद्ध हो या गुटनिरपेक्ष हो।

प्रारंभ में इस नीति में 25 देश सदस्य थे, वर्तमान में यह संख्या बढ़कर 113 हो गया। (इसमें एशिया, अफ्रीका, एवं लैटिन अमेरिका का देश है।) समय-समय पर इसके शिखर सम्मेलन भी होते रहते है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर विचार किया जाता है। अब तक 13 गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन हो चुके है (13 वाँ सम्मेलन - 25-26 Feb. 2003 कुआलालम्पुर (मलेशिया) में आयोजित किया गया। जिसमें सदस्य राष्ट्रों की संख्या 116 है जिन्होंने इस सम्मेलन में भाग लिया। 115 वाँ सदस्य - पूर्वी तिमोर तथा 116 वाँ - सेंट विंसेंट व ग्रेनेडाइन्स हैं।)

★ गुटनिरपेक्ष के उद्देश्य (Aims of Non-Alignment):- गुटनिरपेक्ष के निर्माण के समय से ही इसके निम्न उद्देश्यों को बनाया गया है – (i) शांति की स्थापना का संकल्प और सहयोग (ii) साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की समाप्ति (iii) रंग-भेद और प्रजातिवाद का विरोध (iv) अं. शांति और विकास (v) सभी राष्ट्रों का स्वतंत्र अस्तित्व (vi) तीसरी दुनिया के सुरक्षा और विकास (vii) निःशस्त्रीकरण एवं शस्त्रनियंत्रण (viii) विश्व शांति एवं सुरक्षा हेतु सं. रा. संगठन को सहयोग एवं समर्थन (ix) शोषण का विरोध (x) अमानवीय और मानवीय

मूल्यों का विरोध (x) वार्ताओं द्वारा समस्याओं के समाधान में रुचि (xi) महाशक्तियों के दबाव में न आने की नीति (xii) विश्व बन्धुत्व का विकास (xiii) सैनिक सुरक्षा सन्धियों का विरोध (xiv) पंचशील सिद्धान्त में विश्वास इत्यादि।

* गुटनिरपेक्ष की उपलब्धियाँ (Achievements of Non-A.):-

गुटनिरपेक्ष आंदोलन अंतर्राष्ट्रीय जगत में एक क्रांतिकारी आंदोलन सिद्ध हो गया है। अविकसित और विकासशील देशों का भविष्य गुटनिरपेक्ष आंदोलन में ही है। संसार के लगभग 70% देशों का प्रतिनिधित्व यह आंदोलन कर रहा है इसके सदस्यों संख्या 2003 ई० में 116 हो गई है। युगोस्लाविया के भूतपूर्व राष्ट्रपति मार्शल टीटो ने कहा था कि "गुटनिरपेक्षता मानव जाति की आत्मा और भविष्य है।" इसकी मुख्य उपलब्धियाँ है—

(i) गुटनिरपेक्षता के दोनों गुटों द्वारा मान्यता— गुटनिरपेक्षता एक नई संकल्पना है। प्रारम्भ में इसके देशों को कठिनाई से जुझना पड़ा कि अन्य राष्ट्रों को कैसे समझा जाए कि गुटनिरपेक्ष क्या है, कि अं० सम्बंधों के संदर्भ में इसे एक स्वतंत्र और नई संकल्पना के रूप में मान्यता कैसे दिलाई जाए? दोनों गुट यह समझते थे कि जो भी देश गुट-निरपेक्ष है वह वस्तुतः गुप्त रूप से दूसरे गुट के साथ बंधा हुआ है। दोनों गुटों के इन दृष्टिकोणों में धीरे-धीरे परिवर्तन आया। साम्यवादी राष्ट्रों का दृष्टिकोण 1953 में जोसेफ स्टालिन की मृत्यु के बाद से ही बदलना शुरू हो गया। फरवरी 1956 में सो० क० पार्टी की 20वीं कांग्रेस ने न केवल पहली बार यह बात स्वीकार की कि गुटनिरपेक्ष देश सचमुच स्वतंत्र है, बल्कि यह भी अनुभव किया कि विश्व की सभी मूलभूत समस्याओं के बारे में सोवियत संघ और गुटनिरपेक्ष देशों के एक से विचार है। पश्चिमी गुट ने तो 70वें दशक में जाकर गुटनिरपेक्षता की नीति को मान्यता दी।

(ii) विश्व राजनीति में संघर्षों को टालना— गुटनिरपेक्ष के प्रभाव से कुछ विकट संघर्ष टल गए या उनकी तीव्रता कम हुई या फिर उनका

समाप्त हो गया और विशेषतः तीसरा युद्ध भी नहीं छिड़ा जिसकी सम्भावना के बारे में 1950 से शुरू होनेवाले दशक के मध्य में सरकारी और गैर सरकारी स्तरों पर चिंता व्यक्त की जा रही थी। गुटनिरपेक्ष का यह दावा सही है कि न्यूक्लियर अस्त्रों के सबसे खतरनाक दशक में अं० शांति और सुरक्षा को बनाए रखने में एवं बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योग दिया। गुटनिरपेक्ष देशों ने सर्वोच्च शक्तियों को उस रास्ते से हटा दिया जिस पर चलते-2 उनके बीच प्रत्यक्ष संघर्ष की स्थिति में आ सकती थी और इसकी बजाय उन्हें अपने से कम विकसित देशों को विकसित करने की शान्तिपूर्ण प्रतिद्वंदिता के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी, और इस तरह उन्होंने अं० नीतियों को स्थिर रूप देने में योग दिया। विश्व में जिस तरह से अस्त्रों-शस्त्रों की होड़ हो गई थी उसमें गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने अं० शांति और सुरक्षा बनाए रखने में सफलता प्राप्त की। इसी के कारण कोरिया का युद्ध, स्वेज नहर का संकट, हंगरी की समस्या, कंपूचिया की समस्या ईरान-इराक युद्ध आदि विश्वयुद्ध का रूप धारण नहीं कर सका।

(iii) <u>शीतयुद्ध को शस्त्रयुद्ध में परिणत होने से रोकना</u> – दो महाशक्तियों के बीच चल रहे शीतयुद्ध को समाप्त करने में गु०नि० आंदोलन का प्रमुख हाथ रहा है। शीतयुद्ध कभी भी विश्वयुद्ध का रूप ले सकता था। इसका ही परिणाम है कि दो परस्पर विरोधियों की शक्ति में सम्मिलन हुआ और विश्व से शीतयुद्ध का खतरा ही समाप्त हो गई।

(iv) <u>निःशस्त्रीकरण एवं शस्त्रनियंत्रण की दिशा में प्रगति</u> – निःशस्त्रीकरण और अस्त्र नियंत्रण के लिए बातचीत करने में गुटनि० देशों ने जो भूमिका निभाई उसमें, उन्हें एकदम से सफलता नहीं मिली, फिर भी उसने लोगों को यह नहीं भुलने दिया कि विश्व शान्ति का बढ़ावा देने की सारी चर्चों के सामने अस्त्र-शस्त्र बढ़ाने की बेलगाम दौड़ कितनी खतरनाक है।

(v) <u>विश्व समाज के लिए उन्मुक्त वातावरण का निर्माण</u> –
नवोदित कमजोर राष्ट्रों को महाशक्तियों के चंगुल से निकालकर

उन्हें स्वतंत्रता के वातावरण में अपना अस्तित्व बनाए रखने का अवसर गुटनिरपेक्ष ने प्रदान किया। गुटबन्दी की विश्व राजनीति के दमघोटू राष्ट्र समाज में गुटनिरपेक्षता ताजी हवा का झोंका लेकर आयी। यह ताजी हवा थी खुले समाज के गुणों की, मुक्त और खुली चर्चा के वरदान की, तीव्र मतभेद और रोष के समय भी संपर्क के रास्ते खुले रखने के महत्व की।

(vi) अपनी राष्ट्रीय प्रकृति के अनुरूप विकास के प्रतिमान – गुटनिरपेक्ष देश की बड़े-2 उपलब्धियों में से एक यह है कि उन्होंने, अमेरिकी और सोवियत आदर्श थोपे जाने का विरोध किया और अपनी राष्ट्रीय प्रकृति के अनुसार विकास के अपने राष्ट्रीय सांचों और पद्धतियों का आविष्कार किया। इस तरह भारत ने अपने समाज के समाजवादी ढाँचे का आविष्कार किया और अरब राष्ट्रों ने "अरब समाजवाद" का।

(vii) U.N.O के स्वरूप के रूपांतरित करना – गुटनिरपेक्ष की नीति और इसके राष्ट्रों ने U.N.O को कुछ दृष्टियों से हमेशा-2 के लिए रूपांतरित करने में सहायता दिया है। एक तो अपनी संख्या के कारण दूसरे शीतयुद्ध में अपनी अधिक तटस्थ दृष्टि और भूमिका के कारण गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने U.N.O को छोटे राष्ट्रों के बीच शांति कायम रखने वाले संगठन से ऐसे संगठन में रूपांतरित करने में सहायता की जिसमें छोटे राष्ट्र बड़े राष्ट्रों पर कुछ नियंत्रण रख सके।

(viii) अविकसीत राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग की बुनियादी – अविकसीत राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सहयोग की बुनियाद रखने में गुटनि. राष्ट्रों को सफलता मिली है। कोलम्बो शिखर सम्मेलन में तो एक आर्थिक घोषणा-पत्र स्वीकार किया गया जिसका मुख्य आधार यह थी कि गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों के बीच अधिकाधिक आर्थिक सहयोग हो और इस आर्थिक सहयोग के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयत्न किया जाय।

(ix) नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग – गुटनिरपेक्ष आंदोलन के काहिरा में जुलाई 1962 में आयोजित आर्थिक विकास की समस्याओं पर सम्मेलन में पहली बार आर्थिक विषय का उल्लेख हुआ था। काहिरा सम्मेलन में मुख्य बल 'सहायता और 'सुधरे व्यापार

सम्बन्धों पर किया गया। लुसाका शिखर सम्मेलन में गुटनि. देश ने आर्थिक और विकास सम्बन्धी मामलों पर विकसित और औ-द्योगिक देशों के साथ 'सामान्य पहल' का संकल्प किया। मई 1974 को 'नई अं. अर्थव्यवस्था स्थापित करने की घोषणा' और एक 'कार्यवाही योजना' के ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किए।

इस प्रकार गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने 43 वर्षों के संघर्षपूर्ण यात्रा में यह कुछ अन्य मामलों में भी उपलब्धि हासिल की है जैसे साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, प्रसारवाद के समाप्ति में सफल रहा है, मानव जाति के उत्थान, शांति की स्थापना, अस्थिरता के सभी तरीके विस्तारवाद, विदेशी प्रभुत्व और आधिपत्य समाप्त करने में यह काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है और निभा रहा है। यह उत्तर-दक्षिण संवाद एवं दोनों के मध्य विषमताओं को कम करने में भी सफल रहा।

★ **गुटनिरपेक्ष आंदोलन की विफलताएँ या कमजोरियाँ : आलोचना**

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की निम्न आलोचना हुआ है-

(i) अवसरवादी और काम निकालने की नीति- पश्चिमी आलोचकों के अनुसार गुटनिरपेक्ष एक अवसरवादी और काम निकालने की नीति होकर रह गई है, गुटनिरपेक्ष देश सिद्धान्तहीन है, गैर साम्यवादी और साम्यवादी गुट के साथ अपने संबंधों के संदर्भ में वे 'दोहरी कसौटी' का प्रयोग करते हैं. और यह कि उनका ध्येय पश्चिमी और साम्यवादी दोनों गुटों से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का और जिसका पलड़ा भारी हो उसकी ओर मिल जाने का रहता है।

(ii) सिद्धांततः उपयुक्त किन्तु अव्यवहारिक नीति- आलोचकों के अनुसार यह नीति सिद्धांततः जितनी उपयुक्त है उतनी व्यवहारतः उससे बहुत भिन्न है और सिद्धान्ततः इसमें चाहे गुण कितने भी न हो व्यवहारतः यह कई तरह से विफल हुई है अतः यह कहा जा सकता है कि जहां सिद्धांत के धरातल पर गुटनिरपेक्षता का ध्येय राष्ट्रों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना है,

व्यवहार के धरातल पर इसने बहुत से गुटनिरपेक्ष देशों के संदर्भ में इस दायित्व को वस्तुतः निभाया नहीं है। जहां कुछ मामलों में कुछ गुटनि. देशों ने साम्यवादी शिविर के देशों का समर्थन किया, वहाँ इन्ही गुटनि. राष्ट्रों ने अन्य अवसरों पर उन्ही देशों की आलोचना भी की।

(iii) बाह्य सहायता पर निर्भरता – इसकी विफलता यह भी है कि वे बाहरी आर्थिक और रक्षा सहायता पर बेहद निर्भर रहे हैं। चूंकि वे दोनों गुटों से सहायता प्राप्त करने की स्थिति में थे, इसलिए उन्होंने इतनी भारी आर्थिक और रक्षा सहायता लेने का रास्ता निकाल लिया कि आज वे अपने सहज-सामान्य कार्य निर्वाह के लिए भी इस सहायता पर आश्रित हो गए हैं। आलोचकों का मानना है कि सच्ची गुटनि. आर्थिक आत्मनिर्भरता को मुख्य रूप में मानकर चलती है। यदि कोई राष्ट्र किसी तरह की सहायता के लिए किसी अन्य राष्ट्र या समूह पर बहुत आश्रित हो तो इसका मतलब है उस राष्ट्र की स्वतंत्रता को और गुटनि. को भी दाँव पर लगा दिया गया है।

(iv) गुटनि. नीति किसी भी तरह सुरक्षा का साधन नहीं – आलोचकों का मानना है कि गुटनि. राष्ट्र गुटनि. को अपनी सुरक्षा के लिए पर्याप्त मानते थे यदि वे अत्यंत विशाल रक्षा व्यवस्था रखेंगे तो उनकी गुटनि. सुरक्षित नहीं रह जायेगी। और यदि वे बाहर से सैनिक सहायता स्वीकार करेंगे तो उसकी गुटनिरपेक्षता का स्वरूप शुद्ध नहीं रह जायेगा। चीनी आक्रमण के दौरान भारत के लोगों ने यह भी अनुभव किया कि अन्य गुटनिरपेक्ष देशों में सबको भारत के साथ सहानुभूति नहीं थी जबकि बहुत से ऐसे देशों ने जो पश्चिमी गुट के साथ बंधे थे या भारत के प्रति सहानुभूति दिखाई, या चीनी आक्रमण का मुकाबला करने में भारत की सहायता दी। यही इस बात का प्रमाण है।

(v) संकुचित नीति – विदेश नीति का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसे गुटनि. की नीति में बांधा नहीं जा सकता। गुटनि. का दायरा बहुत सीमित है। गुटों से बाहर क्रियाशील होने की कल्पना इस अवधारणा में है ही नहीं। सारी नीति गुटों की राजनीति के आसपास घूमती है। गुटों की आपसी झगड़े में पंच बनने की कोशिश करना या दोनों से [illegible]

रहते दूर रहे कि केवल इतने समीप जाने का प्रयत्न करना कि दूसरा बुरा न माने और यदि दूसरे के बुरा मानने का डर हो तो पहले से नापतौलकर दूर रहना या बारी-बारी से पास जाना या दूर रहना, यही इसकी शैली रही है।

(vi) <u>राष्ट्रहित के बजाय नेतागिरी की नीति</u> — आलोचक इसे ऊर्ध्वमूल नीति कहते हैं ऐसी नीति, जिसकी जड़े ऊपर हैं, नीचे की अपने देश में नहीं। राष्ट्रहित उसके केन्द्र में नहीं है। उसके केन्द्र में नेतागिरी की भावना रही है। मोर का नाच, पांव कितने ही कमजोर हो, गंदे भी, लेकिन पंख फैलाकर नाच होना चाहिए, दुनिया के मंचों पर नेतागिरी चमकनी चाहिए।

(vii) <u>गुटनि॰ एक दिशाहीन आंदोलन</u> — आलोचक का कहना है कि नई विश्व व्यवस्था की जिसमे शक्ति नही सदभावना नियामक तत्व हो, निर्माण करना तो दूर रहा, गुटनि॰ आंदोलन अपने आप में ही बिखरता जा रहा है। हवाना सम्मेलन (1979) की कार्यवाही से स्पष्ट हो गया था कि सम्पूर्ण आंदोलन तीन खेमो में बँट गया है — एक में क्यूबा, अफगानिस्तान, वियतनाम, इथियोपिया, द॰ यमन, जैसे सोवियत सम्पर्क परस्त देश थे, तो दूसरे में सोमालिया, सिंगापुर, जैरे, फिलीपिंस, मोरक्को, मिस्र आदि अमरीकी परस्त देश। तीसरे खेमे में भारत, युगोस्लाविया और श्रीलंका जैसे देश थे। यह बँटवारा इस बात का सबूत था कि गुटनि॰ आंदोलन की अपनी कोई दिशा नहीं रह गई और वह अब महाशक्तियो के खिलवाड़ का प्रतिबिम्ब मात्र रह गया था।

(viii) <u>गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों में बुनियादी एकता का अभाव</u> — गुटनि॰ राष्ट्रों के आलोचक मानते हैं कि इसमें बुनियादी एकता का अभाव है। समृद्ध राष्ट्रों के शोषण के विरुद्ध मोर्चाबन्दी करना तो दूर रहा, वे आपस में एक-दूसरे के सहायता करने की भी ठोस योजना नही बना सके। गुटनि॰ एक दूसरे के शोषण करने में भी बाज नहीं आते। अपनी जीवन रक्षा के लिए भी गुटनि॰ देश कोई संयुक्त रणनीति नही बना पाई।

इस तरह से इन सब आलोचनाओं से गुट नि. आंदोलन में एक नई आलोचना भी उत्पन्न होते हैं जैसे– महाशक्तियों का दबाव, सैन्य गुट या सैनिक गुटबंदी, आर्थिक अनुदान महाशक्तियों के द्वारा दी गई, द्विपक्षीय विवाद, तथा एकता का अभाव आते हैं।

* प्रासंगिकता (Relevance): गुटनि. विश्व राजनीति में विश्व व्यापी आंदोलन बन गया है इसने विशेषतः छोटे-छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर सदस्यों के संदर्भ में राष्ट्रों की स्वतंत्रता और समता बनाए रखने में योग दिया है। इसने विश्व में ध्रुवीकरण को रोककर विचार-धारा शिविरों के विस्तार को और प्रभाव का संचय करके अं. शांति और सुरक्षा बनाए रखने और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योग दिया है। इसने उपनिवेश को स्वतंत्र कराने, प्रजातीय समता को साकार करने, अल्पविकसित देशों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में बहुत बड़ा योग दिया है। आज सं.रा. संघ के 2/3 से देश (NAM) के दायरे में आ गया है। सं.रा. संघ के विभिन्न मंचों से गुटनि. राष्ट्रों ने विश्व शान्ति, उपनिवेशवाद का अंत, परमाणु अस्त्रों पर रोक, निःशस्त्रीकरण, हिन्द महासागर को शांत क्षेत्र घोषित करना, नई अं. आर्थिक व्यवस्था का निर्माण आदि विषयों पर संगठित रूप से कार्यवाही की है और सफलता भी हासिल की।

आज जब शीतयुद्ध की वातावरण समाप्त हो गया, सोवियत संघ का विघटन हो गया, पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवाद को कब्र में दफना दिया गया, जर्मनी का एकीकरण हो चुका है, नाटो की भूमिका में परिवर्तन आ रहा है तो ऐसी स्थिति में यह अप्रासंगिक हो गई है। 1992 में तो इसे समाप्त करने पर भी जोर दिया गया।

लेकिन आज यह सं.रा. संघ का केन्द्र बनकर महत्वपूर्ण भूमिका ~~निभा सके~~ है। अदा कर सकता है निःशस्त्रीकरण के क्षेत्र भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्यूँकि शावीं शताब्दि में आर्थिक युद्ध होगी इस स्थिति में गुटनिरपेक्ष आंदोलन का कार्य वर्तमान में बहुत ही कठिन होगा। इसलिए आज इसके निम्न क्षेत्रों में इसकी प्रासंगिकता उभर आती है—

(i) नई अं. व्यवस्था की पुरजोर मांग करने में (ii) आणविक निःशस्त्रीकरण के लिए दबाव डालना, (iii) दक्षिण-दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन देने में

(iv) एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमेरिकी दादागिरी का विरोध करने में (v) विकसित और विकासशील (उ.द.वार्ता) देशों के बीच सार्थक वार्ता के लिए दबाव डालने में, (vi) अच्छी वित्तीय स्थिति वाले गुटनि. देशों को विकासात्मक उद्देश्य को तैयार करने में (vii) नव-औपनिवेशिक शोषण का विरोध करने में (viii) U.N.O के संगठन पुनः और वीटो की power एवं महासभा के अधिकार को बढाने में।

निष्कर्ष (Conclusion)

पूर्ण समीक्षा के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गुटनिरपेक्ष की राजनीतिक प्रासंगिकता चाहे अवश्य समाप्त हो गया है, फिर भी आर्थिक न्याय की प्राप्ति के लिए प्रयास करने का प्रमुख साधन आज भी गुटनिरपेक्षता है। एक आर्थिक आंदोलन के रूप में गुटनिरपेक्षता का भविष्य निश्चित रूप से उज्जवल है। तृतीय विश्व के आंदोलन का स्थान राजनीतिक पक्ष से हटकर आर्थिक पक्ष पर केंद्रित हो गया है। जबतक आर्थिक समृद्धि और दरिद्रता के आधार पर उत्तर तथा दक्षिण में विश्व विभाजित रहेगा तब तक आर्थिक न्याय की तलाश जारी रहेगी, और गुटनि. की आर्थिक प्रासंगिकता बनी रहेगी। गुटनि. देशों के नेताओं को अपने दृष्टिकोण और विचार में परिवर्तन करना होगा। उन्हें शीत-युद्ध से मुक्त विश्व में गुटनि. आंदोलन की राजनीतिक भूमिका में परिवर्तन करना होगा। अब इसका मूल आधार नीति निर्धारण की स्वतंत्रता में है। साथ ही जब तक न्याय, समता और समानता पर आधारित नयी अर्थव्यवस्था स्थापित नहीं हो जाती तब तक विश्वस्तरीय देशों की शिकायतें को दूर करवाने के साधन के रूप में गुटनिरपेक्ष अवश्य उपयोगी बनी रहेगी।

Dr. Akhlakh Ahmad
(Asst. Prof.) Dept. of Pol. Sc.
D.K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner